होम्योपैथी एक दर्द रहित 'उपचार'

: डॉ. ए.पी.एस. छाबड़ा

लेखक: डॉ. ए.पी.एस. छाबड़ा
एम.डी (सी.सी.आर., इंडियन
ऑफ मेडिसिन, होम्योपैथी)

होम्योपैथी एक पूर्णत: वैज्ञानिक चिकित्सा पद्धति है, जिसका उद्भव लगभग 200 वर्ष पहले हुआ। होम्योपैथी सम: समं, शमयति के सिद्धांत पर काम करती है, जिसका अर्थ है समान की समान से चिकित्सा अर्थात एक तत्व जिस रोग को पैदा करता है, वही उस रोग को दूर करने की क्षमता भी रखता है। इस पद्धति के द्वारा रोग को जड़ से मिटाया जाता है।

एक वैकल्पिक चिकित्सा पद्धति के रूप में होम्योपैथी भारत में काफी हद तक लोकप्रिय है. इसकी व्यापक स्वीकार्यता का आलम यह है कि कई लोग यह भी मानते हैं कि यह एक मूलत: भारतीय प्रणाली है. सरकार के अपने आंकड़ों के अनुसार, यह देश में चिकित्सा का दूसरा सबसे लोकप्रिय रूप है, जिस पर हमारे देश की लगभग 10 प्रतिशत से अधिक आबादी निर्भर करती है।

होम्योपैथी को 1796 में सैमुएल हैनीमेन नामक एक जर्मन चिकित्सक ने सर्वप्रथम ईजाद किया था। होम्योपैथी को 1800 के दशक में व्यापक रूप से उस वक्त अपनाया गया था जब आधुनिक चिकित्सा विकसित हो ही रही थी और इसमें इलाज की कई दर्दनाक पद्धतियां शामिल थी। दूसरी ओर नई-नई बीमारियां मानव आबादी को संक्रमित कर रही थीं, और वे चिकित्सा विज्ञान में अभी तक पकड़ में नहीं आई थीं। ऐसे माहौल में होम्योपैथी ने दर्द रहित 'उपचार' का वादा किया और काफी लोकप्रियता हासिल की।

भारत में, होम्योपैथी की शुरुआत 19वीं शताब्दी के दौरान हुई और इसे बंगाल के माध्यम से देशभर में जल्दी ही अपना लिया गया। पहला भारतीय होम्योपैथिक संस्थान, कलकत्ता होम्योपैथिक मेडिकल कॉलेज, वर्ष 1881 में स्थापित किया गया था। 1973 में, केंद्र सरकार ने होम्योपैथी को चिकित्सा की राष्ट्रीय प्रणालियों में से एक के रूप में मान्यता दी और इसकी शिक्षा और अभ्यास को विनियमित करने के लिए सेंट्रल काउंसिल ऑफ होम्योपैथी की स्थापना की जिसको इस वर्ष 2021 मेनेशनल कमीशन ऑफ होम्योपैथी बना दिया गया है।

इस पद्धति में रोगियों का उपचार न केवल होलिस्टिक दृष्टिकोण के माध्यम से, बल्कि रोगी की व्यक्तिवादी विशेषताओं को समझ कर उपचार किया जाता है।चिकित्सक, रोगी की शारीरिक और मानसिक स्तर पर सभी अपविन्यास को समझते हुए और लक्षणों के माध्यम से रोगी की वैचारिक छवि बना कर एक प्रतीक समग्रता लाता है और रोगी के लिए सबसे उचित दवा का चयन करता है।

होम्योपैथी बहुत सारे रोगों में सफल कारगर है खास कर ऐसे कहीं रोग जिन में डॉक्टर ऑपरेशन करने की सलाह देते हैं जैसे की गुर्दे की पथरी, गर्भाशय की गांठ इत्यादि। महिलाओं और बच्चों के रोग में भी बहुत इस्तेमाल होती है और इस मामले में एक और खास बात है की होम्योपैथिक दवाएं लेने में बच्चो को किसी तरह की कोई परेशानी भी नहीं झेलनी पड़ती क्योंकि इन्हें मीठी गोलियों में दिया जाता है। चरम रोग में जहां मरीज कहीं तरह की क्रीम वगेरह लगाता रहता जिससे कुछ समय के लिए बीमारी दब जाती है और बाद में फिर से होने लग जाती है ऐसे में होम्योपैथी में बिना किसी क्रीम के सिर्फ होम्योपैथिक दवाइयों द्वारा उनका सफल इलाज संभव है। होम्योपैथी के इलाज में ज्यादा खर्चा भी नहीं होता है तो इसे गरीब से गरीब आदमी भी ले सकता है। और जितना हो सके होहोम्योपैथी को भारत के हर गांव हर घर तक पहुंचाया जा सके जिससे की जायदा से ज्यादा लोगो को इसका लाभ मिल सके।

सर्वे भवन्तु सुखिनः।
सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु।
मा कश्चित् दुःख भाग्भवेत्॥

डॉ. जितेन्द्र कुमार